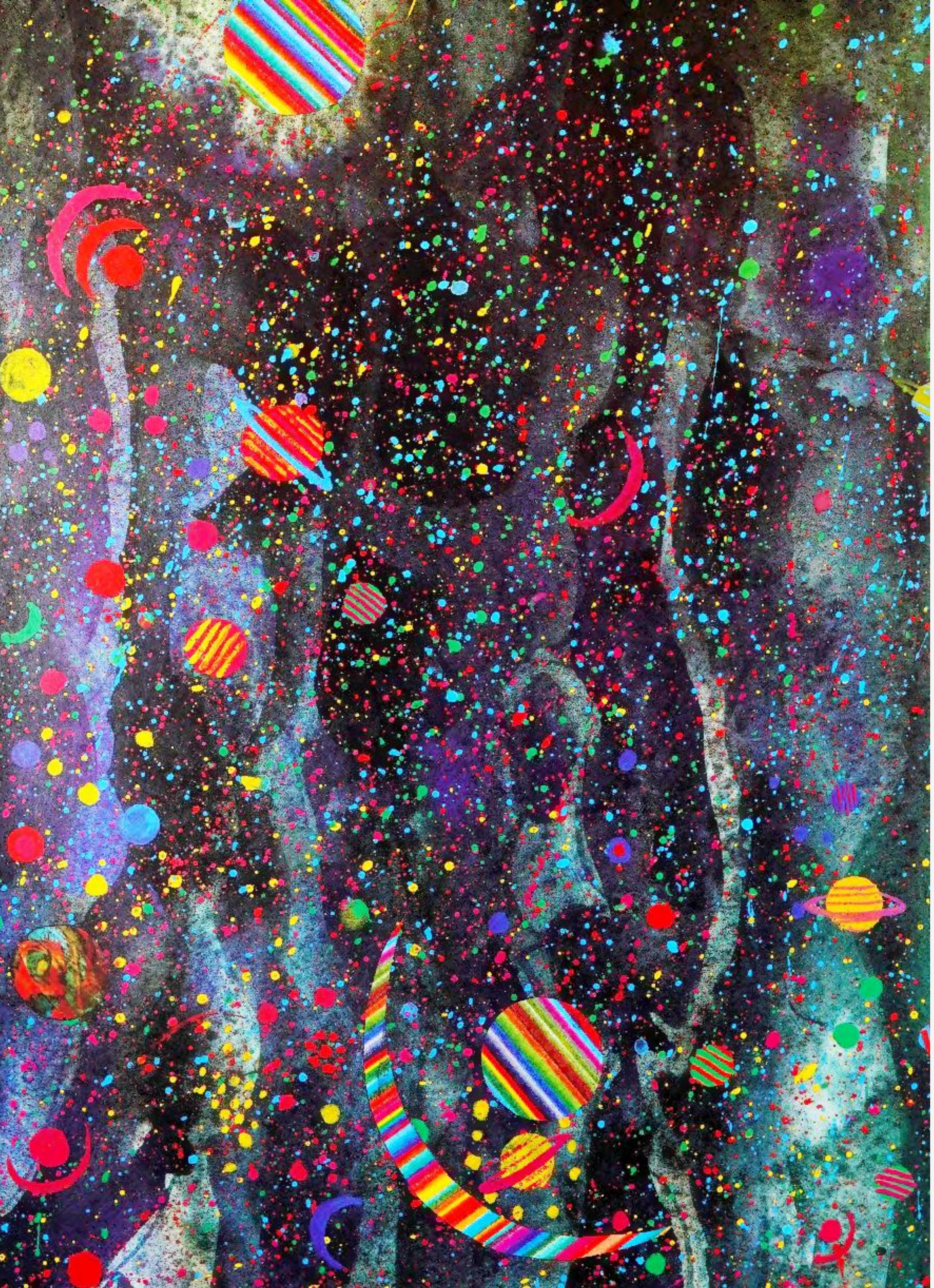
राजकुमारी और चाँद

लेखनः दाइसाकू इकेदा, चित्रः ब्रायन वाइल्डस्मिथ

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा







राजकुमारी और चाँद



राजकुमारी और चाँद

लेखनः दाइसाकू इकेदा

चित्रः ब्रायन वाइल्डस्मिथ

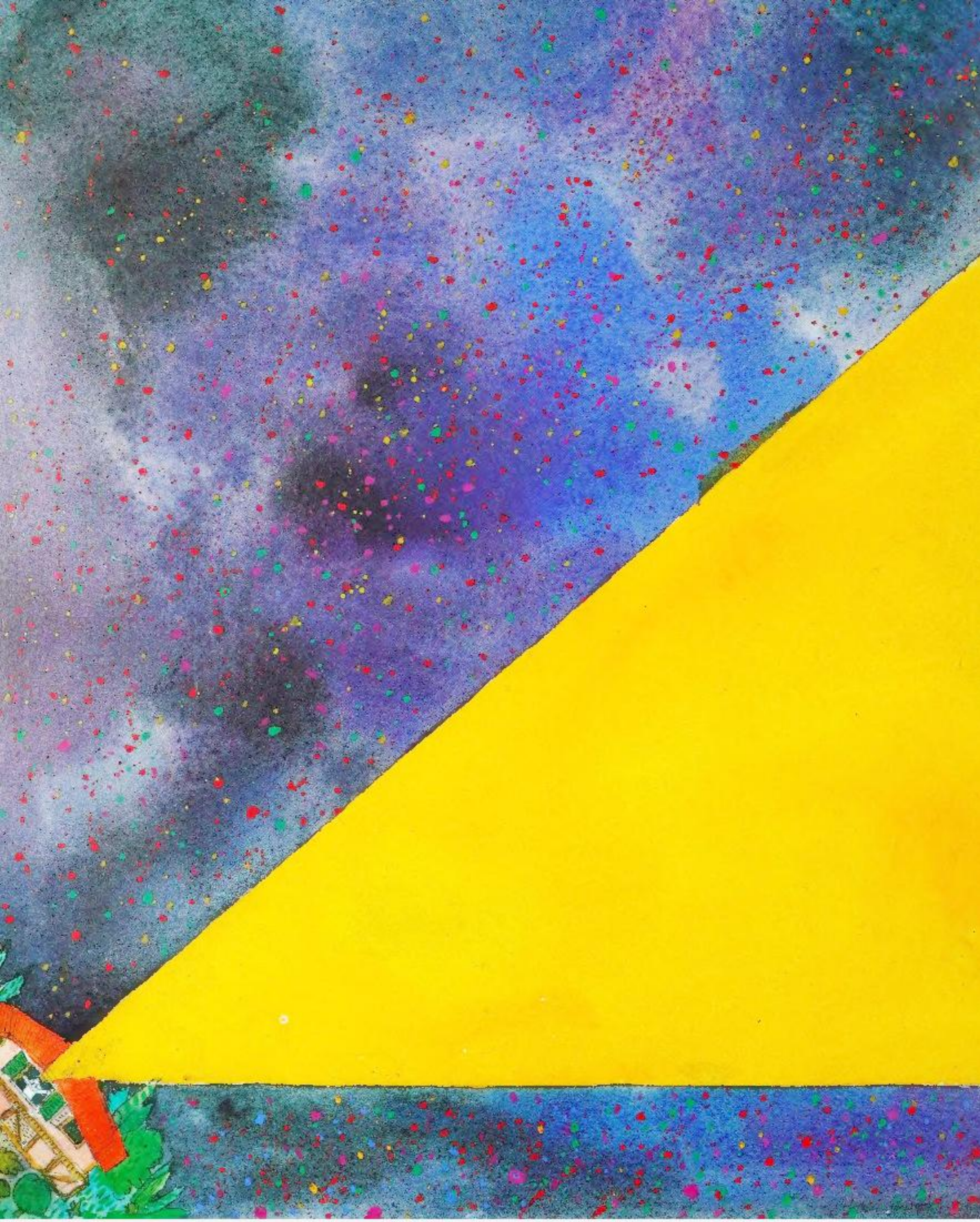
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा





एक सजीले, खुशनुमा चेहरे की तरह रात में आधाचाँद दुनिया भर के बच्चों के घरों पर चमकता हैः खुश और उदास बच्चों पर, प्यार करने वाले और कठोर बच्चों पर, समझदार और बेवकूफ बच्चों पर।

क्या तुमने कभी यह सोचा है कि शायद चाँद नीचे तुम्हें देखता होगा? सोफी ने तो सपने तक में ऐसा नहीं सोचा था।

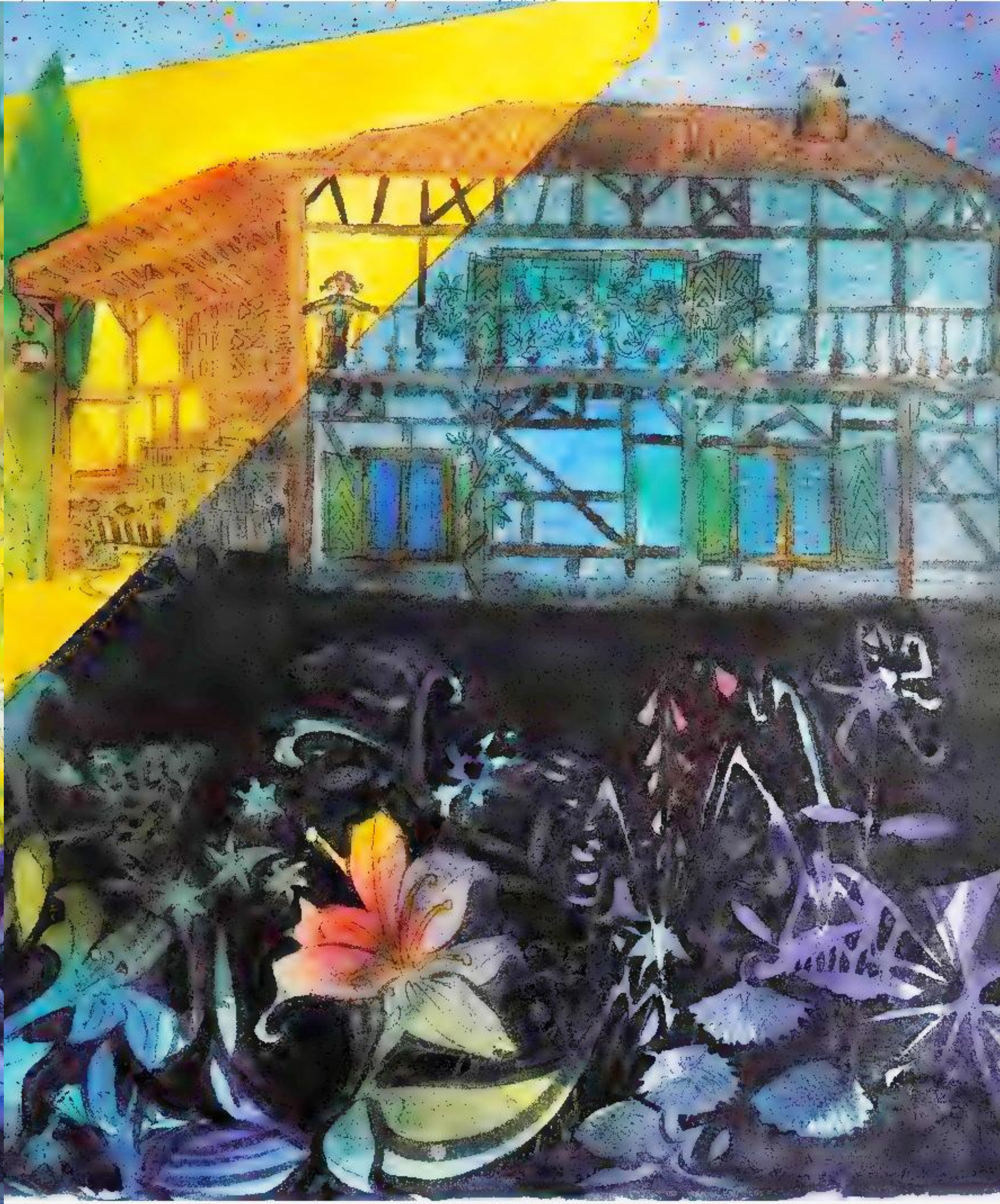


पर कुछ ही समय पहले सोफी ने अपनी खिड़की से बाहर
देखा कि महान चाँद खरगोश, चन्द्रकिरण से नीचे कूदा।



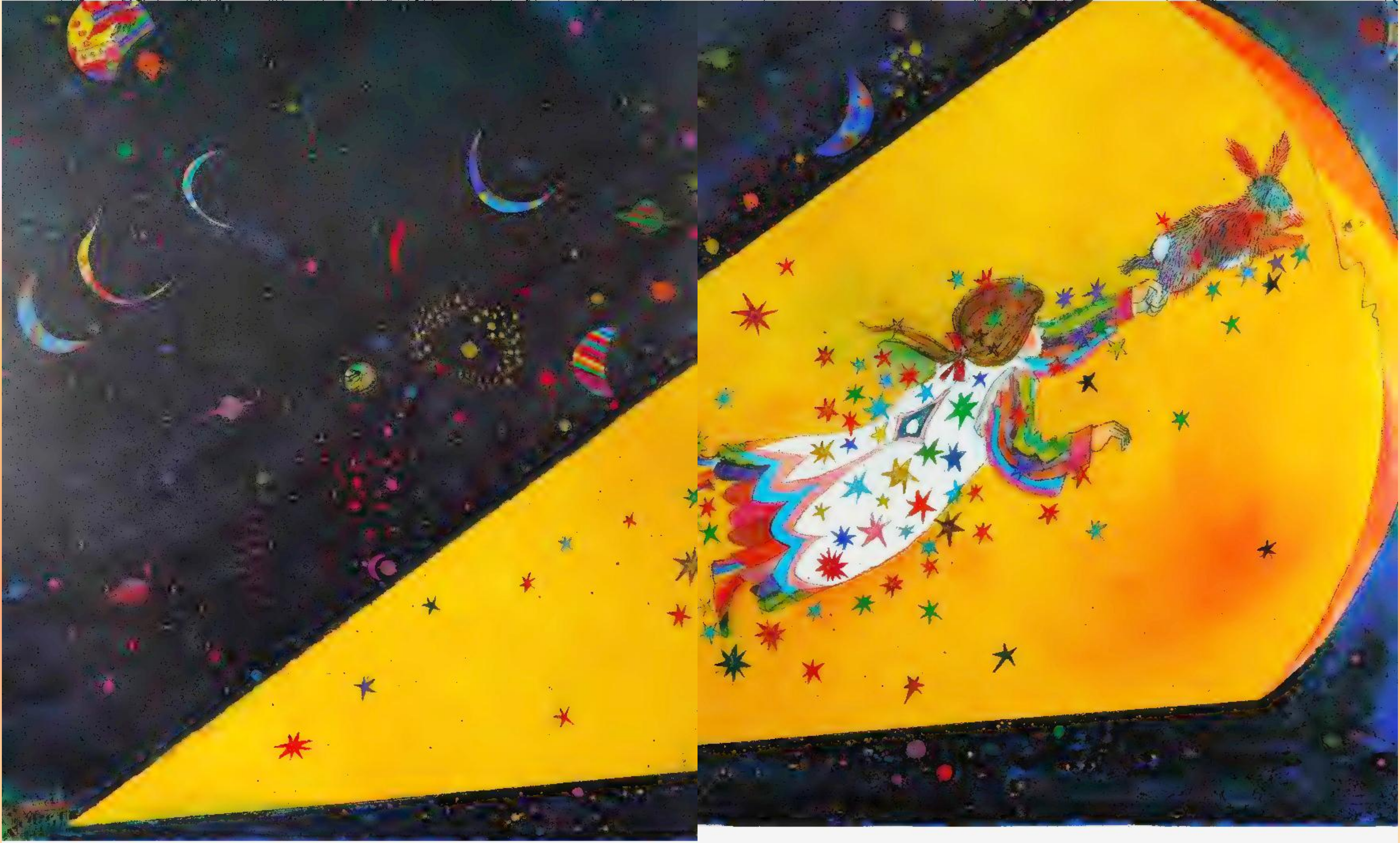
उसकी आँखें चमचमा रही थीं और उसके लम्बे कान तारा-
धूलि से भरे थे। उसके रोएं चाँद की रोशनी में दमक रहे थे।





वह उग्र भी था, पर थरथरा भी रहा था, वह कोमल भी था और डरावना भी। वह रात के बाग में फूलों के बीच उतरा। उसके पंजे हौले से मिट्टी में धंसे और रोएं हवा में लहराए।

"चाँद तुम्हें देखता रहा है सोफी, और उसने जो देखा है उससे वह नाखुश है। मेरा पंजा थामो, तुम्हें मेरे साथ चलना होगा।"



वह ना-नुकुर करती इसके पहले सोफी और खरगोश ऊपर उठती चन्द्रकिरण पकड़ चाँद के दागदार चेहरे की ओर बढ़ चले।

''पर मैंने किया क्या है?'' सोफी ने पूछा। क्या मैं बदमिजाज़ हूँ इसलिए?''

''क्या इसलिए कि मैं स्कूल में शैतानी करती हूँ? या इसलिए कि कोई मुझे पसन्द नहीं करता? क्या चाँद मुझसे नाराज़ है?''

उसके सवालों का चाँद खरगोश ने कोई जवाब नहीं दिया।





लगा एक युग बीत गया हो - या महज एक पल - कि सोफी तारों से बने मेहराब की ओर उड़े जा रही थी, जो चाँद का प्रवेश-द्वार था। अन्दर हंसने-खेलने कि आवाज़ें आ रही थीं - बच्चों के मिलजुल कर खेलने की आवाजें। द्वार खुलने पर सोफी ने जो दृश्य देखा वह तो जाना-पहचाना भी था और बड़ा ही अजीब भी।



उसके चारों ओर बच्चे खेल रहे थे, नाच, गा और बातचीत कर रहे थे। हरेक के सिर पर ताज था और कंधों से लटकी रेशमी चूनर। सोफी ने उन्हें पुकारा पर किसी ने जवाब न दिया। पास से एक राजा-रानी गुज़रे, वे सिर झुका अपनी बेटी की बात सुन रहे थे - वह एक सुन्दर-सी राजकुमारी थी। जब राजकुमारी ने अपना सिर उठाया, तो उसका चेहरा ठीक वैसा था जिसे सोफी हर दिन अपने घर के आइने में देखा करती थी।



"हाँ सोफी," महान चाँद खरगोश ने कहा। "राजा और रानी तुम्हारे माता-पिता हैं। राजकुमारी तुम हो। दूसरे बच्चे तुम्हारे स्कूल के सहपाठी हैं।"

"वे मुझसे बात क्यों नहीं कर रहे?" सोफी ने उदासी से पूछा।



“वे बोल इसलिए नहीं रहे, क्योंकि वे यहाँ हैं ही नहीं,” खरगोश ने कहा। “ये तो धरती-पर-के-बच्चों के प्रतिबिंब हैं - हर लड़की, हर लड़का जैसे वह सचमें हैं।”



“जैसे वे सचमें हैं? बकवास! मैं उस लड़की को जानती हूँ - वह पैट है,” सोफी ने बदतमीज़ी से उसकी ओर इशारा कर कहा। “वह स्कूल में कभी साथ नहीं जुड़ती। अपना चेहरा हमेशा खट्टा बनाए रखती है। वह हमेशा लड़ती है। उसे कोई पसन्द नहीं करता।

“पर यहाँ तुम उसके शर्मीलेपन और अकेलेपन के नीचे दबे उसके असली रूप को देख रही हो। तुम वह देख रही हो जैसी वह होती, बशर्ते उससे एक राजकुमारी-सा बरताव किया जाता। पता है ना, सभी ऐसे बरताव के हकदार हैं।”





"वहाँ देखो, जहाँ चाँद-पर-की-सोफी राजा और रानी के साथ खाना खा रही है। हमेशा मुस्कुराती। हमेशा मददगार। हमेशा धीरज धारे। हमेशा आगे आने वाली अच्छी चीज़ों की राह देखती।"

"फिर तो वह कतई मेरी तरह नहीं है," सोफी ने जलन से भर कहा।

"क्या मतलब है तुम्हारा?" खरगोश ने पूछा। "वह तो धरती-पर-की-सोफी का ही प्रतिबिंब है।"

"पर वह ताज और सुनहरी चूनर में कितनी सुन्दर लग रही है।"

"ओहो, पर बात कपड़ों की है ही नहीं," महान खरगोश बोला। "बात यह है कि वह मुस्कुरा रही है और उसका दिल खुला है।"



घर लौटने का रास्ता सोफी को दूर नहीं लगा। पर जब वह खरगोश की चमकदार पीठ पर सवार हो लौट रही थी, उसने चाँद की रोशनी में जगमग पथ को दूधिया दिन में मिलते देखा।

"हम सब यहाँ नीचे राजकुमारी और राजकुमार हैं," उसने खुद को कहते पाया। "काश यह सच होता। काश मैं चाँद-पर-की-सोफी जैसी बन पाती . . . क्या मैं ऐसी बन सकती हूँ? क्या यह संभव है?"





“मत जाओ,” सोफी ने खिड़की पर बैठे खरगोश से कहा। “हमेशा राजकुमारी बने रहने में तुम मेरी मदद कर सकते हो।”

“तुम्हें मदद की ज़रूरत है ही नहीं,” महान खरगोश ने कहा। “आज रात तुमने बहुत कुछ सीखा है।“

“पर जब सिर पर ताज न पहना हो, तो यह मुश्किल होता है!” सोफी बोली।

“ताज न पहना हो?” खरगोश ने कहा। “पर धरती-पर-के-सभी बच्चों के ताज होते हैं। बात सिर्फ यह है कि सूरज की रोशनी में वे नज़र नहीं आते।”

अगले दिन सोफी ने पाया कि खरगोश ने सच कहा था। मुस्कुराना और दूसरे बच्चों से मेहरबानी से पेश आना आसान था। इसलिए क्योंकि उसने सबको चाँद की आँखों से देखना सीख जो लिया था। उन चीज़ों को देखना सीख लिया था जो सचमें मायने रखतीं हैं।



“तुम्हें सोफी की फिक्र हो रही थी ना,” महान खरगोश ने चाँद से कहा। “हमेशा बदमिजाज़, कभी न मुस्कुराने वाली, स्कूल में किसी के साथ कदम मिला न चलने वाली सोफी की।”

“हो रही थी क्या?” भुलक्कड़ चाँद ने कहा। “कतई नहीं। सोफी को देखो तो ज़रा। जब वह गाती है सारे ग्रह उसे सुनने के लिए रुक जाते हैं। जब वह मुस्कुराती है, तारे गुलामाटी खाने लगते हैं। ना, ना, तुम्हें गलत याद है। मेरा मतलब किसी दूसरी छोटी लड़की से रहा होगा।”

महान खरगोश ने कुछ न कहा। उसने अपना पंजा उठा थोड़ी सी तारा-धूलि एक कान से पोंछी और उस तेज़ी से दमका जितनी तेज़ी से चाँद दमकता है।

